Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

नारी के प्रति हुए अन्याय की अभिव्यक्ति : भूमिजा

डॉ. मारोती यमुलवाड
असिस्टेंट प्रोफेसर
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
बलभीम महाविद्यालय बीड
mgyamulwad@gmail.com
Mo. No. 8208921797

प्रगतिशील विचारधारा के कवि नागार्जुन ने 'भूमिजा' में सीता एवं अहल्या के चरित्र को नया दृष्टिकोण प्रदान कर नारी के प्रति हुए अन्याय को अभिव्यक्ति दी हैं। साथ ही नागार्जुन ने अपनी लोकदृष्टी द्वारा उपेक्षित जीवन बितानेवाली सीता के त्याग को मूल्य प्रदान किया है। नागार्जुन की सीता सिर्फ सती साध्वी, पतिव्रता, पत्नी मात्र नहीं है। वह अन्याय और अविश्वास पर आक्रोश प्रगट करनेवाली विद्रोही नारी है। कवि ने स्त्रियों के उत्कर्ष, समान हक और नीति की अपेक्षा करके स्वस्थ समाज की परिकल्पना करते हुए 'भूमिजा' काव्य की रचना की है। "सीता के प्रति अन्याय करनेवाले राम को मर्यादा पुरुषोत्तम न मानकर उन्हें 'भूमिजा' में दोषी ठहराया गया है। नागार्जुन की सीता एक समकालीन नारी का प्रतीक है, जो राजनैतिक अनीति के खिलाफ विद्रोह करनेवाली भी है। सभी जानते हैं कि सीता के साथ अन्याय हुआ है। यहाँ तक राम भी इस बात को इनकार नहीं कर सकते। कोई भी अनपढ़ गँवार रामायण की कथा को सुनकर सीता के प्रति हुए अन्याय को झुठला नहीं सकता। फिर भी अपनी गर्भवती पत्नी, सीता को त्यागकर उसके साथ जो अन्याय किया है, बेगुनाह होते हुए भी सीता को दोषी ठहराकर उसके प्रति जो एकपक्षीय न्याय दिखाया है, उस ओर दृष्टि डालना ही नागार्जुन का ध्येय है।"[1]

भूमिजा में रामकथा को प्रगतिशील, यथार्थवादी जन-दृष्टि द्वारा वैचारिक कसौटी पर परखने के उद्देश्य से कवि नागार्जुन ने रामकथा के केवल तीन प्रसंगों को चुना है। तीनों प्रसंग लोकभूमि में घटित होते हैं। राम काव्य की दृष्टि से 'भूमिजा' नागार्जुन की श्रेष्ठ कृति है। इसमें राम कथा के प्रमुख चरित्र राम, लक्ष्मण, सीता, महर्षि विश्वामित्र, वाल्मीकि, गौतम ऋषि, अहल्या, ताड़का, त्रिजटा, लव-कुश आदि हैं। राम के बाल्यकाल में ही महर्षि विश्वामित्र राक्षसों के आतंक से परेशान होकर राजा दशरथ के पास पहुंचते हैं। वे रावण के अनुचर मारीच और सुबाहु के द्वारा यज्ञ में विघ्न डालने का उल्लेख करते हैं। वे इन राक्षसों की माता ताड़का के आतंक की भी चर्चा करते हैं और इन राक्षसों के संहार हेतु महर्षि विश्वामित्र राजा दशरथ से राजकुमार रामचन्द्र की माँग करते हैं। राजा दशरथ पुत्रमोह के कारण अपने दोनो बालकों को विश्वामित्र के संग भेजने लिए हिचकिचाते है। गुरु वशिष्ठ के कहने पर चिन्तित दशरथ के मन से भय दूर हो जाता है और वे दोंनो प्रिय पुत्रों को विश्वामित्र के संग भेजने के लिए तैयार हो जाते है। महर्षि विश्वामित्र अपने साथ राम-

लक्ष्मण को लेकर चल पड़ते है। कोसल राज्य की सीमा सरयू नदी तक है। सरयू नदी के किनारे गुरु विश्वामित्र राम और लक्ष्मण बालू पर बैठे हुए हैं। राम अनुज लक्ष्मण से कहते हैं कि कोसल राज्य की सीमा यहीं तक है। इसके बाद सरयू नदी के उस पार मगध राज्य शुरू हो जाता है। मगध के लोग बड़े शूर वीर होते हैं।

दोपहर में भोजन करने के बाद नींद आने लगती है, शरीर की इस स्वाभाविक स्थिति से ऋषि मुनि भी मुक्त नहीं है। सरयू नदी के तट पर राम-लक्ष्मण एक जगह बालू पर बैठकर बातें कर रहे हैं, तो दूसरी ओर ऋषि विश्वामित्र दोपहर के भोजन के बाद विश्राम कर रहे हैं। अपना प्रदेश छोड़ते समय राम भावुक हो उठते हैं। वे लक्ष्मण से कहते हैं कि हम लोगों का कोसल जनपद अत्यन्त सुन्दर है। ऐसा सुन्दर प्रदेश फिर कहाँ मिलेगा? यहाँ की धरती अत्यन्त उर्वर है, हरे-भरे फसल हैं। लतागुल्म, तृण, तरु, सब सुन्दर लग रहे हैं। ये सभी सरयू नदी के जल से अभिसिंचित हैं। मन को मोहने वाली यह धरती हमसे दूर हो जायेगी। महर्षि विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को कई बातें और कहानियां बतातें हैं। राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र का संग बहुत ही ज्ञानवर्धक और अति रुचिकर लगता है। साथ ही परीजानों से बिछुडने का दर्द उन्हें सताता है।

ऋषि विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण हंस की तरह दिखने वाली नौका पर सवार होकर सरयू और गंगा के संगम को पार करते हैं। ऋषि उन्हें उन नदियों की महिमा का वर्णन करते हैं। मुनि सरयू के उद्गम और भगीरथ द्वारा लायी गई गंगा की महिमा और इतिहास राम-लक्ष्मण को बताते हैं। अपने पुर्वजों की कथा और उनका गुणगान सुनकर राम-लक्ष्मण बहुत खुश होते हैं। नाव के किनारे लगने के बाद राम गंगा को प्रणाम करते हैं। जिससे तीनों प्रकार के ताप मिट जाते हैं। धीरे-धीरे नदी की धार पतली होने लगती है और सामने कुछ गाँव दिखाई देते हैं। विश्वामित्र के साथ वे एक घने और भयानक जंगल के में पहुंचते हैं। सड़ी लाशों की दुर्गन्ध, झींगुरों की आवाज आदि को झेलते हुए वे सभी जंगल पार करते हैं। लक्ष्मण खाने के लिए कुछ कंद-मूल, फल ढूँढ़कर ले आते हैं। राम लकड़ी और पानी ले आते हैं। पत्थर से आग निकालकर दोनों भाई भोजन बनाने लगते हैं। भोजन करने के बाद दोनों गुरु विश्वामित्र की सेवा करने लगते हैं। गुरु विश्वामित्र हाथ-पैर धोकर जल ग्रहण कर मृगछाला पर बैठे हुए हैं। वे राम और लक्ष्मण से ताड़का नामक राक्षसी के उपद्रव और आतंक के बारे में बताते है। वे सभी वहीं रात्रि विश्राम करते हैं। 'भूमिजा' के पहले सर्ग में यहीं तक की चर्चा मिलती है। भूमिजा के दूसरे सर्ग में गौतम मुनि और अहल्या की कथा आरंभ होती है। आम के पेड़ के नीचे गौतम मुनि आसन लगाकर ध्यान मग्न बैठे हुए हैं। वे ऐसे ध्यान मग्न हैं जैसे किसी पुष्करिणी के बीच में नींद पड़ी एक मछली हो -

"आम्र वृक्ष की छाया में आसीन,
मुनि गौतम थे ध्यान मग्न ज्यो मीन,
पड़ा हुआ हो निद्रा सुख में लीन,
पुष्करिणी के बीच अचल निश्चेष्टा।"[2]

राम और लक्ष्मण हाथ जोड़कर गौतम मुनि को प्रणाम करते हैं। वे देखते हैं कि पूरा आश्रम अस्त-व्यस्त है। कहीं भी मृगछाला या कोई वस्त्र नहीं है। पशुओं के लिए चारा कुछ भी तो नहीं था वहां। पेड़ सूखे और कीड़े लगे हुए हैं। खिले हुए फूल कहीं दिखलाई नहीं देते हैं। वहाँ से थोड़ी दूर एक झोपड़ी है। वहाँ दोनों भाई देखते हैं कि नारी की एक प्रतिमा पथराई - सी जमीन पर पड़ी हुई है। राम पाषाणी प्रतिमा को ध्यान से देखने लगते हैं। फिर पास जाकर मूर्ति का स्पर्श करते हैं। मूर्ति में प्राण आने लगते हैं। उसकी आँखें खुल जाती हैं। होठ फड़फड़ाने लगते हैं। प्रतिमा में जान आते ही स्नेह भरे नयनों से राम की ओर देखकर उस पाषाणी ने राम से परिचय पूछा।

"पापणी में किया प्राण-संचार
कौन देव, तुम मेरे हृदयाधार?
असुर क्रूर, तो सुर होते हैं धूर्त;
क्षणमति होते किन्नर औ' गन्धर्व,
दुर्विदग्ध संशयी, हृदय से हीन
होता मानव, तुम हो उससे भिन्न!
धन्वन्तरी का कर - पल्लव - संस्पर्श
सुनती हूँ, करता अमरत्व प्रदान
घनश्याम, बतलाओ तुम हो कौन?
पाषाणी में डाल दिए हैं प्राण।"[3]

विनीत भाव से उत्तर देते हुए राम ने कहा कि वे कौशल्यापति दशरथ के पुत्र हैं। राम और लक्ष्मण छोटा-सा नाम है। इधर राक्षसों ने भीषण उत्पात मचा रखा था। कोई भी यज्ञ सम्पन्न नहीं होने देते थे। उन दुष्टों को ही ठिकाने लगाने के लिए हमें पिताजी से माँग कर कौशिक मुनि विश्वामित्र ले आये। वे राक्षस सब मारे जा चुके हैं। विधिवत् सारे यज्ञ सम्पन्न हो चुके हैं। देवताओं ने अपने-अपने भाग पाये। हमें ढेर सारा आशीर्वाद मिला। उन्हीं महाकुलपति मुनि विश्वामित्र से आदेश लेकर हम इधर घूमने निकले हैं। आज हमारा दसवाँ दिन है। इस कुटी में आए, आप स्वस्थ हुई। हमारा अहोभाग्य कृपा कर अपना नाम, गोत्र और कुल बताइए किस अभिशापवश आप पत्थर हो गयीं?

आगे अहल्या अपने बारे में बतलाती हुई कहती है।

"गौतम-दार, अहल्या मेरा नाम,
यहीं कहीं होंगे मुनि भी हे राम!
दिया उन्हीं ने मुझको यह अभिशाप।"[4]

"नागार्जुन की अहल्या अपने प्रति हुए अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है। नागार्जुन के अनुसार अहल्या प्रतिमा बनने के पीछे महर्षि के शाप से ज्यादा पति का अविश्वास था।..... कवि नागार्जुन ने यहाँ

अहल्या प्रसंग को काफी महत्त्व देकर आधुनिक बनाया है। इन प्रसंगों में नारी के प्रति दोषारोपण और एकपक्षीय न्याय हुआ है। राम अहल्या को निर्दोष मानते हैं और पति के शाप को अनुचित कहते हैं। राम अहल्या को वचन भी देते हैं कि वे कभी भी किसी भी नारी के प्रति क्रूर व्यवहार नहीं करेंगे। यही बात राम के द्वारा कहलवाने के लिए ही कवि ने अहल्या प्रसंग को प्रस्तुत किया है। आगे के सर्ग में वे यही सवाल उठाते हैं कि अहल्या को वचन देने के कारण क्या राम का यह कर्तव्य नहीं था कि वे सीता के साथ उसी वचन का पालन करके न्याय करें। यदि उन्हें अपनी प्रतिज्ञा याद रहती तो अपनी पत्नी के साथ कभी अन्याय नहीं करते। इस बात पर दृष्टि डालने के लिए ही कवि ने अहल्या प्रसंग को प्रधानता दी है।"[5] भूमिजा में पुरुष वर्ग के छल से वांछित और पति के अविश्वास से पीडित अहल्या की करुण कहानी है। इसके बाद ऋषि विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण सीता स्वयंवर हेतु जनकपुर (मिथिला) के लिए प्रस्थान करते हैं। "इसके आगे की कथा और बीच की घटनाओं को नागार्जुन जी ने छोड़ दिया है। सीता स्वयंवर, वनगमन, सीता हरण, रावण वध, अयोध्या आगमन, राज्याभिषेक आदि तथ्यों को छोड़कर आगे की कथा सीधे उत्तर रामायण की ओर उन्मुख होती है, जहाँ सीता अपने जुड़वाँ बालकों के संग आश्रम के परिवेश में अपना जीवन बिताती हैं। कवि का लक्ष्य यहाँ रामायण की कथा कहना नहीं है। सीता के चरित्र द्वारा कवि नारी के प्रति हुए अन्याय पर प्रकाश डालते हैं। यहाँ श्रीराम को अपराधी ठहराकर सीता के लिए न्याय की अपेक्षा करते हैं।..... स्त्री और पुरुष को समान दर्जा मिलने पर ही समाज की उन्नति हो सकती है। साथ ही सीता यहाँ अन्याय के विरुद्ध आवाज उठानेवाली साहसी आधुनिक नारी का प्रतीक है।"[6]

लंका विजय के उपरान्त, वनवास के चौदह वर्ष पूरे कर अयोध्या वापस आकर राम गद्दी पर बैठते हैं। इसके बाद ही रामायण का सबसे दुखद अध्याय प्रारम्भ होता है। जिस सीता के लिए लंका कांड के रूप में इतना बड़ा संग्राम हुआ, उसी सीता को प्रजा वर्ग से एक धोबी द्वारा उनके लंका निवास-अवधि के सन्दर्भ में लांछित किए जाने के कारण पुनः वनागमन करना पड़ता है। श्रीराम का सीता को त्यागने के बाद लक्ष्मण उसे तमसा तट प्रदेश में छोड़कर चला जाता है। सीता तब गर्भवती थी। वन में सीता को रामायण- प्रणेता महामुनि वाल्मीकि के आश्रम में स्नेह प्राप्त होता है। वाल्मीकि उसे पुत्री की तरह मानते थे।

रावण की पराजय के बाद राम के शिविर में आने के बाद सीता ने अग्नि परीक्षा द्वारा अपनी पवित्रता प्रमाणित कर दी थी। फिर भी उसे अयोध्या आने पर अपने ही लोगों द्वारा चरित्र पर उंगली उठाये जाने की वजह से यह दिन देखना पड़ा। इस बात का सीता को बहुत दुख है। सीता रघुकुल की एकपक्षीय मर्यादा और न्याय के प्रति व्यंग्यपूर्ण नारी सुलभ आक्रोश व्यक्त कर रही है। आखिर वह बार-बार अपनी पावनता, अपनी चारित्रिक शुद्धता के पक्ष में सफाई क्यों दे। इतिहास में अपना नाम अंकित करवाने वाले पुरुषोत्तम राजा अपनी कीर्ति की रक्षा कर रहे हैं तो सीता जैसे सामान्यजन को क्या लेना-देना है। राजतन्त्र में पोषित राम की नीति के विपरीत सीता अपने को लोक कुल में पनपे हुए घास की तरह देखती है। इस सोच से उसे आत्म मर्यादा का उच्च भाव-बोध होता है। सीता अपने जन्म के बारे में बताती है कि जनकपुर में धाई कहती

थी कि उसका जन्म धरती से हुआ है। तू धरती की बेटी है हल की नोंक से लगा ढक्कन से ढंका एक ठोस घड़ा निकला, उसी से वह निकली और सीता कहलाई। धरती उसके लिए माँ-बाप, विस्तर-बिछावन सब कुछ है। वह राजा जनक के कुल की सन्तान नहीं है। भूमिजा है। इस बात को राजा और बाकी सब कोई उससे छुपाते थे। अन्त में वही धरती चिता भी बनेगी। जनक तो उसके पालनहार भर थे। उसे खुशी है कि राम का अभिजात कुल सीता को पचा नहीं सका। वह पुनः अपनी माँ के ममतामय आश्रय में लौट आयी है। सीता के विलाप को सुननेवाला भले ही अयोध्या में कोई नहीं है, परन्तु अपने दुख की सीमा तक पहुँचकर सीता ने जो भूमि समाधि ली है वह इतना सशक्त है कि उसमें युग को बदलने तक की ताकत विद्यमान है। सीता अन्तर्धान के प्रसंग को माता की गोद में विश्राम लेने का रूप देना नया है। कवि इस बात पर प्रकाश डालना चाहते हैं कि दुख की सीमा से निकलने के लिए सीता द्वारा लिया गया यह निर्णय सामान्य नारियों से अलग है। इस दृष्टि से सीता का पथ किसी भी स्त्री की तुलना में निश्चय सर्वोच्च है।

'भूमिजा' का तृतीय सर्ग सीता के जीवन से संबंधित है। यहाँ सीता दुःखी नजर आती है। धरती फटती है और सीता उसमें समा जाती है। तीसरे सर्ग की कथा उत्तर रामायण का अंश है जहाँ सीता अपने दोनों पुत्रों को वाल्मीकि के आश्रम में पालती है। सीता के इस हाल का जिम्मेदार राम को ठहराया गया है क्योंकि उन्होंने सीता के साथ अन्याय किया है। नागार्जुन के राम दोषी हैं क्योंकि उन्होंने अपनी गर्भवती पत्नी के साथ एकपक्षीय न्याय किया है। 'भूमिजा' में सीता प्रधान पात्र है और राम गौण।

नागार्जुन एक प्रगतिवादी कवि हैं। इस राम कथा में उनका यह प्रगतिवादी रूप 'सीता' के माध्यम से दिखलाई पड़ता है। प्रगतिवाद, सामाजिक रूढ़ि का विरोध करता है। पुरानी सड़ी-गली, व्यर्थ की, पहले से चली आ रही परम्पराओं का विरोध करता है और नई उचित मानवतावादी व्यवस्था का समर्थन राम-कथा में हम देखते हैं कि राम-रावण युद्ध में राम की विजय होती है। उसके बाद सीता अग्नि परीक्षा के द्वारा अपनी पवित्रता प्रमाणित कर देती है। फिर भी अयोध्या में एक धोबी धोबिन के संवाद के कारण उसे निर्वासित कर दिया जाता है, क्योंकि राम को राजधर्म का पालन करना था। ' नागार्जुन ' इस अमानवीय और अन्यायपूर्ण व्यवस्था के प्रति विरोध व्यक्त करते हैं। यह विरोध एक व्यक्ति विशेष 'राम' का नहीं, बल्कि रूढ़िग्रस्त परम्परा का है। नागार्जुन सीता के मुख से इसके प्रति आक्रोश प्रकट करते हैं-

"हाय रे राजा ! हाय री नीति !
हाय री रूढ़िबद्ध जन-भीति !
हाय रे पुरुष ! हाय रे दंभ !
हाय रे एकपक्षीय वह न्याय !
इकहरी मर्यादा का बोध
करे साडम्बर नारी - मेध।"[7]

अतः लेखक ने परिचित, लोकप्रसिद्ध, **विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ रामायण की कहानी** को एक औजार के रूप **में प्रयोग कर उनमें चर्चित पात्र** राम और सीता को चुनकर, **सीता के प्रति हुए अन्याय** का उत्तरदाता राम को ठहराया गया **है और यह भी कहने की चेष्टा की गई है कि राम एक आदर्श पात्र नहीं** है। सभी जानते हैं कि सीता दोष रहित, **पवित्र है और उसके साथ अन्याय हुआ है। परन्तु यह अन्याय क्या** इसलिए अन्याय नहीं है **कि उसे मर्यादा पुरुषोत्तम देवरूप** राम ने किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. आलोचना- अक्टूबर-दिसंबर 2011, पृ. - 146
2. 'भूमिजा' – नागार्जुन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. - 46
3. 'भूमिजा' – नागार्जुन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. - 49
4. 'भूमिजा' – नागार्जुन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. - 51
5. आलोचना - अक्टूबर-दिसंबर 2011, पृ. - 149
6. आलोचना - अक्टूबर-दिसंबर 2011, पृ. - 151
7. 'भूमिजा' – नागार्जुन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. - 59